ISSN No-2031-5063 Vol.1,Issue.VII/Jan 2012pp.1-4

Research Paper

''हिंदी पत्रकारिता में रवीन्द्र कालिया का योगदान''

Prof.Rangane. D. Shankar

प्रस्तावना :–

किसी भी राष्ट्र के निर्माण और विकास में उस देश की पत्रकारिता का स्थान महत्त्वपूर्ण होता है। पत्रकारिता देश तथा समाज को नेतृत्व प्रदान करने का सशक्त तथा सक्षम माध्यम है। यही वजह है कि आज पत्रकारिता जनसत्ता का चौथा आधार स्तंभ है। विश्व में पत्रकारिता का विकास अपनी चरमसीमा पर पहुॅचा हुआ दिखाई देता है। विश्व मे ऐसा कोई भी क्षेत्र नहीं रहा है जिसमें पत्रकारिता का अभाव दिखाई देता है।

पॉचवी शताब्दी के पूर्व रोम में संवाद लेखन होते थे जो दूर के नागरिकों तक समाचार लिखकर पहुॅचाया करते थे। छापखाने का अविष्कार होने तक इसी प्रकार के हस्तलिखित समाचारों का प्रचलन रहा। 18 वी शताब्दी में पत्रकारिता का जन्म हुआ। पहले पत्रकारिता को एक मिशन माना जाता था। एक मिशन को लेकर पत्रकार इस क्षेत्र में प्रवेश करते थे। उनके मन में सेवा–भाव रहता था। वैचारिक स्वतंत्रता समाज की उन्नति और देश की समृदिध के लिए सब कुछ करने को तैयार रहते थे।

हिंदी पत्रकारिता की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर अगर दृष्टि डाले तो एक बात सिदध हो जाती है कि हिंदी पत्रकारिता के क्षेत्र में कदम रखने वाले पत्रकार पहले साहित्यकार ही थे। आज हिंदी पत्रकारिता एक विशाल क्षितिज तक फैल चुकी है और यह किसी भी दृष्टि से अग्रेंजी पत्रकारिता से हीन नहीं है। पत्रकारिता का लक्ष्य न केवल समाचारों को पाठकों तक पहुॅचाना होता है साहित्य और विविध विषयक सामग्री को प्रकाशित करके पाठकों का मनोरंजन करना उनके ज्ञान में अभिवृदि्ध करना उन्हें स्वस्थ जागरूक नागरिक बनाना भी उसका ध्येय रहता है। संपादक लक्ष्मीशंकर व्यास एवं पराडकर ने एक आदर्श पत्रकार के बारे में लिखा है –''पत्रकार का स्थान आधुनिक समाज मे बडे महत्त्व का है। समाज के जीवन में जिन प्रश्नों पर उचित निर्णय की अवश्यकता होती है और जिन निर्णयों पर समाज का जीवन अंत में निर्भर रहता है उनके बारे में जनता को योग्य जानकारी कराना और अधिक से अधिक लाभ जनता को पहुॅचाना एक आदर्श पत्रकार का कर्तव्य होता है।'' ठीक इसी तरह पत्रकारिता के क्षेत्र मे रवीन्द्र कालिया का संपादकीय व्यक्तित्व निष्पक्षभाव एवं राग द्वेष से रहित है। यही कारण है कि उनके संपादन में हमेशा बोधगम्य सामग्री का संकलन हुआ है। आज वे साहित्यिक क्षेत्र के अलावा पत्रकारिता के क्षेत्र में भी काफी प्रतिभासंपन्न व्यक्ति सिद्ध हुए हैं।

रवीन्द्र कालिया को जालंधर (पंजाब) में एम.ए. की परीक्षा समाप्त होते ही पत्रकारिता के क्षेत्र में दैनिक 'हिंदी मिलाप' के संपादकीय विभाग से कार्य करने का अवसर उपलब्ध हुआ था। 'हिंदी मिलाप' के लिए लेखक को उसका अनुवाद करने का काम सौंपा था। उन दिनों केंद्रीय हिंदी निदेशालय द्वारा 'भाषा' त्रैमासिक पत्रिका का प्रकाशन होता था। रवीन्द्र कालिया ने उस त्रैमासिक 'भाषा' पत्रिका के कार्यालय में संपादकीय विभाग मे कार्य किया है। 'भाषा' पत्रिका के पश्चात उन्हें मुंबई में 'धर्मयुग' जैसी प्रतिष्ठित बैनेट कोलमैन कंपनी की साप्ताहिक पत्रिका के संपादकीय विभाग में कार्य करने का अवसर मिला था। 'धर्मयुग' पत्रिका के घुटनभरे दफ्तरी माहौल का यथार्थ वर्णन रवीन्द्र कालिया ने अपनी किताब 'गालिब छुटी शराब' इस संस्मरण में करते हुए लिखा है ''धर्मयुग का माहौल अत्यंत सात्विक था संपादकीय विभाग ऊपर से नीचे तक शाकाहारी था। 'धर्मयुग' का चपरासी तक बीडी नहीं पीता था। सिगरेट शराब तो दूर कोई पान तक नहीं खाता था। कई बार तो एहसास होता यह दफतर नहीं कोई जैन धर्मशाला है जहॉ कायदे कानून का बडा कडाई से पालन होता था। दफतर में मुक्त की चाय मिलती थी जिसे लोग बडे चाव से पीते थे। साथियों के व्यवहार से लगता था जैसे सबके सब गुरूकुल से आये हैं और बाल ब्रहमचारी हैं। धर्मयुग की अपेक्षा 'वीकली', 'फेमिना', 'माधुरी' यहॉ तक कि 'सारिका' का स्टाफ उन्मुक्त था। 'धर्मयुग' की शोकसभा से उठकर मै प्रायः उनके बीच जा बैठता। 'इस बात से यही स्पष्ट होता है कि 'हिंदी मिलाप' 'भाषा' 'त्रैमासिक' 'धर्मयुग' जैसी महत्त्वपूर्ण पत्रिकाओं के अंतर्गत राजनीतिक माहौल के कारण रवीन्द्र कालिया को अपनी कला एवं स्वच्छंदता का उपयोग करने में उचित अवसर नहीं मिला। इसी कारण रवीन्द्र कालिया का पत्रकारिता संबंधी कोई विशेष उल्लेखनीय कार्य एवं योगदान नही दिखाई देता। परंतु इलाहाबाद में निश्चित रूप में स्थायी होने पर उन्होंने स्वयं को प्रेस व्यवसाय में समर्पित किया और पत्रकारिता को अपने कलात्मक ढंग से तराशकर उसे विविध रूप में प्रकाशित किया है। इसी विशेषता और विवेक के बारे में प्रेमनाथ चतुर्वेदी ने कहा है – ''समाचार पत्र रथ है तो समाचार उसे उडा ले जानेवाले अंध घोडे और पत्रकार विवेक का धनी चतुर सारथी। यही सारथी समाचार रूपी घोडों को अनुशासन में रखकर पत्र–रथ को गंतव्य की ओर ले जाता है।'' यहॉ पत्रकार की विशेषता स्पष्ट हो जाती है।

अपनी कर्मभूमि इलाहाबाद में 25 वर्ष तक प्रेस व्यवसाय में लगा देने के बाद रवीन्द्र कालिया ने इलाहाबाद में ही 'गंगा यमुना' पत्रिका का संपादन भी कुछ समय तक किया। अपने साहित्यिक लेखन के साथ 1 जनवरी 2005 से रवीन्द्र कालिया ने भारतीय भाषा परिषद कोलकाता में 'वागर्थ' मासिक पत्रिका के संपादन कार्य का स्वीकार किया। उनके संपादकत्व में इस पत्रिका ने नये मानदंड स्थापित किए। उनके पत्रकारिता के अनेक वर्षों की अनुभूति की वजह से 'वागर्थ' पत्रिका में अनेक महत्त्वपूर्ण बदल किए गए जो सामाजिक तथा पाठकों की दृष्टि से काफी महत्त्वपूर्ण साबित हुए। 'वागर्थ' के संपादकीय पृष्ठों पर रवीन्द्र कालिया के विवेकपूर्ण विचार युगीन परिवेश में एक नई चेतना को जन्म देते हैं।

'वागर्थ' का लेखन सीधी सरल सहज भाषा में लिखा हुआ संपादन कला का परिष्कार है। इस पत्रिका के संपादन द्वारा रवीन्द्र

कालिया ने हिंदी पत्रकारिता को एक अलग दिशा देने का महत्त्वपूर्ण कार्य किया है। 'वागर्थ' पत्रिका में लेखक ने अनुभव संपन्न एवं नये रचनाकारों की कृतियों को अलग–अलग स्तंभों में प्रकाशित करने का अहम कार्य किया है। इस विशेष परिवर्तन के कारण ही 'वागर्थ' पत्रिका के पाठकों की संख्या दिन–ब–दिन बढती जा रही है। संप्रति आज वे नई दिल्ली में 'नया ज्ञानोदय' मासिक पत्रिका का संपादन कर रहे हैं। इस पत्रिका मे भी महत्त्वपूर्ण बदल करने की वजह से आज उनकी पत्रकारिता एक नये सिरे से जन्म ले रही है।

निष्कर्ष :

हिंदी पत्रकारिता को पल्लवित एवं विकास के चरम सीमा तक पहुॅचाने के लिए भारतेंदु से लेकर आजतक अनेक लेखक एवं साहित्यकारों ने अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। पाठकों की बढती हुई रूचि के कारण ही आज दैनिक त्रैमासिक साप्ताहिक और मासिक पत्रिकाओं की संख्या में दिन–ब–दिन वृद्धि हो रही है। साठोत्तरी पीढी के अनेक लेखकों ने साहित्य के साथ पत्रकारिता में भी अपना महत्वपूर्ण योगदान देकर पत्रकारिता के रथ को गति दी है। अतः संक्षिप्त रूप में यही कहा जा सकता है कि रवीन्द्र कालिया ने साहित्यिक क्षेत्र के साथ पत्रकारिता के क्षेत्र में भी अपना अमूल्य सहयोग देकर उसमें नये परिवर्तन लाकर पत्रकारिता को एक नई दिशा देने का महत्त्वपूर्ण कार्य किया है। रवीन्द्र कालिया का यह संपादकीय कार्य वर्तमानयुगीन पत्रकारिता के लिए निश्चित एक सराहनीय योगदान सिद्ध होता है।

संदर्भग्रंथ –

1. संपादक लक्ष्मीशंकर व्यास–संपा पराडकर–'आदर्श पत्रकार' पृष्ठ14
2. रवीन्द्र कालिया : 'गालिब छुटी शराब' पृष्ठ 126–127
3. संपादक रामशरण जोशी – 'समाचार संपादन' पृष्ठ 27
4. डॉ. रमेश जैन – व्यावसायिक पत्रकारिता